International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(1): 86-87

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(1): 86-87
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-11-2017
Accepted: 17-12-2017

डॉ0 अर्पिता चन्द्रा
रसूलाबाद, इलाहाबाद,
उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ0 अर्पिता चन्द्रा
रसूलाबाद, इलाहाबाद,
उत्तर प्रदेश, भारत

माहेश्वर सूत्र

डॉ0 अर्पिता चन्द्रा

प्रस्तावना

'अइउण्। ऋलृक्। एओङ्। एऔच्। हयवरट्। लँण्। ञमङणनम्।
झभय्। घढधष्। जबगडदश्। खफछठथचटतव्। कपय्। शषसर्। हल्।'

पाणिनि की अराधना से प्रसन्न होकर भगवान शङ्कर ने चौदह बार डमरु बजाया था, जिससे ध्वनियों का जो समूह निकला था वे ही माहेश्वर सूत्र कहलाते हैं उन्हीं से पाणिनि ने अइउण् आदि चौदह सूत्र प्राप्त किये। इसीलिये इन सूत्रों को माहेश्वर अर्थात् महादेव से प्राप्त हुआ कहते हैं। कहते हैं महामुनि पाणिनि बाल्यावस्था में अत्यन्त मन्दमति थे। जब इन्हें पढ़ने से भी कुछ ज्ञात न हुआ, तब ये खिन्न हो गुरुकुल छोड़ तपस्या करने के लिये हिमालय पर चले गये। वहीं उन्होंने अपनी तपस्या से शिवजी को प्रसन्न किया।

संस्कृत भाषा हजारों वर्षों तक लोकव्यवहार व बोल–चाल की भाषा रह चुकी है और उसमें यह उपयोगी गुण संसार की किसी भी भाषा से कम नहीं है। आज के युग उसका अध्ययन बिना व्याकरण ज्ञान के होना सम्भव नहीं। इसके साथ यह भी ध्यातव्य है कि संसार में केवल संस्कृत ही एक ऐसी भाषा है जिसके व्याकरण सर्वाङ्गीण और परिष्कृत कहे जा सकते हैं। जिससे किसी भाषा के शुद्ध अशुद्ध होने का ज्ञान हो, उसे उस भाषा का व्याकरण कहते हैं। संस्कृत भाषा के अनेक उदाहरण हैं। यथा पाणिनीय, कातन्त्र, चान्द्र, मुग्धबोध, सारस्वत आदि। संस्कृत भाषा के सम्पूर्ण व्याकरणों में पाणिनि मुनि का बनाया व्याकरण ही सर्वश्रेष्ठ, अत्यन्त परिष्कृत, वेदाङ्गों में गणनीय, प्राचीन तथा लब्ध प्रतिष्ठित है।

पाणिनि संस्कृत भाषा के सबसे बड़े वैयाकरण हुये हैं। इनके काल का विषय निश्चित नहीं हुआ। परन्तु अनेक विद्वानों का कहना है कि उनका आविर्भाव भगवान बुद्ध (543 ई0पू0) से बहुत पूर्व हुआ था। कारण कि भगवान बुद्ध के काल में जहाँ पालि और प्राकृत भाषायें जनसाधारण की भाषायें थी वहाँ पाणिनि के काल में उदात्तादिस्वरयुक्त संस्कृत भाषा का ही जनभाषा होना अष्टाध्यायी के अनेक साक्ष्यों से सुतरांसिद्ध होता है। पाणिनि ने स्वयं भी लोकभाषा को अष्टाध्यायी में 'भाषा' के नाम से अनेकशः प्रयुक्त किया है यथा भाषायां सदवसश्रुवः (3.2.108), विभावायाम् भाषायाम् (6.1.175) इत्यादि। पाणिनि से पूर्व शब्दविद्या के अनेक आचार्य हो चुके थे उन्हीं के ग्रन्थों को पढ़कर तथा प्रेरित होकर उन्होंने व्याकरणशास्त्र को व्यवस्थित करने का मन बनाया। पहले तो पाणिनि से पूर्व वैदिक संहिताओं, शाखाओं, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि का जो विस्तार हो चुका था उस वाङ्मय से उन्होंने अपने लिये शब्द सामग्री ली जिसका उन्होंने अष्टाध्यायी में उपयोग किया है। दूसरे निरुक्त और व्याकरण की जो सामग्री पहले से थी उसका उन्होंने सूक्ष्म संग्रह तथा अध्ययन किया। इसका प्रमाण भी अष्टाध्यायी में है, जैसा शाकटायन, शाकल्य, भारद्वाज, गार्ग्य, सेनक, आपिशलि, गालब और स्फोटायन आदि आचार्यों के मतों का उल्लेख से ज्ञात होता है।

चौदह माहेश्वर सूत्र पाणिनीय व्याकरण के प्राण है यह निर्विवाद सत्य है। इनके बिना पाणिनीय व्याकरण चल ही नहीं सकता है। चौदह सूत्रों के 'ण्, क्, ङ्, च्, ट्, ण्, म्, ञ्, ष्, श्, व्, य, र, ल्' ये चौदह वर्ण अन्त्य हैं इनकी इत्संज्ञा है अर्थात् ये इत् नाम वाले हैं। ध्यातव्य है कि व्याकरण शास्त्र में संज्ञा, संज्ञक और संज्ञी शब्दों का बहुत व्यवहार होता है। तात्पर्य यह है कि नाम अर्थात् संज्ञा के बिना न तो जगत् का व्यवहार और न ही शास्त्र का व्यवहार चल सकता है। व्यवहार के लिये आवश्यक है जिसका हम व्यवहार करना चाहें उसकी कोई न कोई संज्ञा अवश्य करें। बिना संज्ञा के कभी भी कोई व्यवहार नहीं चल सकता। अष्टाध्यायी में 'आदिरन्त्येन सहेता (8) आदि सूत्रों से इन ण्, क्, आदि की इत् संज्ञा की जाती है।

इन सूत्रों में अ, इ, उ, आदि स्वर तथा 'हयवरट्' सूत्र से व्यंजन आरम्भ होते हैं। इनमें भी अकार केवल इसलिये हैं कि इनका उच्चारण हो सके। 'लँण्' इस सूत्र से लकारस्थ अकार उच्चारण के लिये नहीं अपितु प्रयोजनवशात् इत्संज्ञक है।

एक शताब्दी से पहले प्रसिद्ध जर्मन भारतविद् मैक्समूलर (1823–1900) ने अपने Science of Thought में कहा–

''मैं निर्भीकतापूर्वक कह सकता हूँ कि अंग्रेजी या लैटिन या ग्रीक में ऐसी संकल्पनायें नगण्य हैं जिन्हें संस्कृत धातुओं से व्युत्पन्न शब्दों से अभिव्यक्त न किया जा सके। इसके विपरीत मेरा विश्वास है कि 2,50,000 शब्द सम्मिलित माने जाने वाले अंग्रेजी शब्दकोश की सम्पूर्ण सम्पदा के स्पष्टीकरण हेतु वांछित धातुओं की संख्या, उचित सीमाओं में न्यूनीकृत पाणिनीय धातुओं से भी कम है। अंग्रेजी में ऐसा कोई वाक्य नहीं जिसके प्रत्येक शब्द का 800 धातुओं से एवं प्रत्येक विचार का पाणिनि द्वारा प्रदत्त सामग्री के सावधानीपूर्वक विश्लेषण के बाद अवशिष्ट 121 मौलिक संकल्पनाओं से सम्बन्ध निकाला जा सके।''

पाणिनि के सूत्रों की शैली अत्यन्त संक्षिप्त है वे सूत्रयुग में ही हुये थे। श्रौत सूत्र, धर्म सूत्र, गृहस्थ सूत्र, प्रातिशाख्य सूत्र भी इसी शैली में हैं किन्तु पाणिनि के सूत्रों को प्रतिष्णात सूत्र कहा गया है। पाणिनि ने वर्ण वर्णमाला को चौदह प्रत्याहार सूत्रों में बाँटा और उन्हें विशेष क्रम देकर 42 प्रत्याहार सूत्र बनाये। पाणिनि की सबसे बड़ी विशेषता यही है जिससे वे थोड़े स्थान में अधिक सामग्री भर सकें। यदि अष्टाध्यायी के अक्षरों को गिना जाय तो उसके 3995 सूत्र एक सहस्र श्लोक के बराबर होते हैं। पाणिनि ने संक्षिप्त ग्रन्थ रचना की और भी कई युक्तियाँ निकाली जैसे अधिकार और अनुवृत्ति अर्थात् सूत्र के एक या कई शब्दों को आगे के सूत्र में ले जाना जिससे उन्हें दोहराना न पड़े। अर्थ करने की कुछ परिभाषायें भी उन्होंने बनाई। एक बड़ी विचित्र युक्ति उन्होंने असिद्ध सूत्रों से निकाली। अर्थात् बाद का सूत्र अपने से पहले के सूत्र के कार्य को ओझल कर दे। पाणिनि का यह असिद्ध नियम उनकी ऐसी तंत्र युक्ति थी जो संसार के अन्य किसी ग्रन्थ में नहीं पाई जाती।